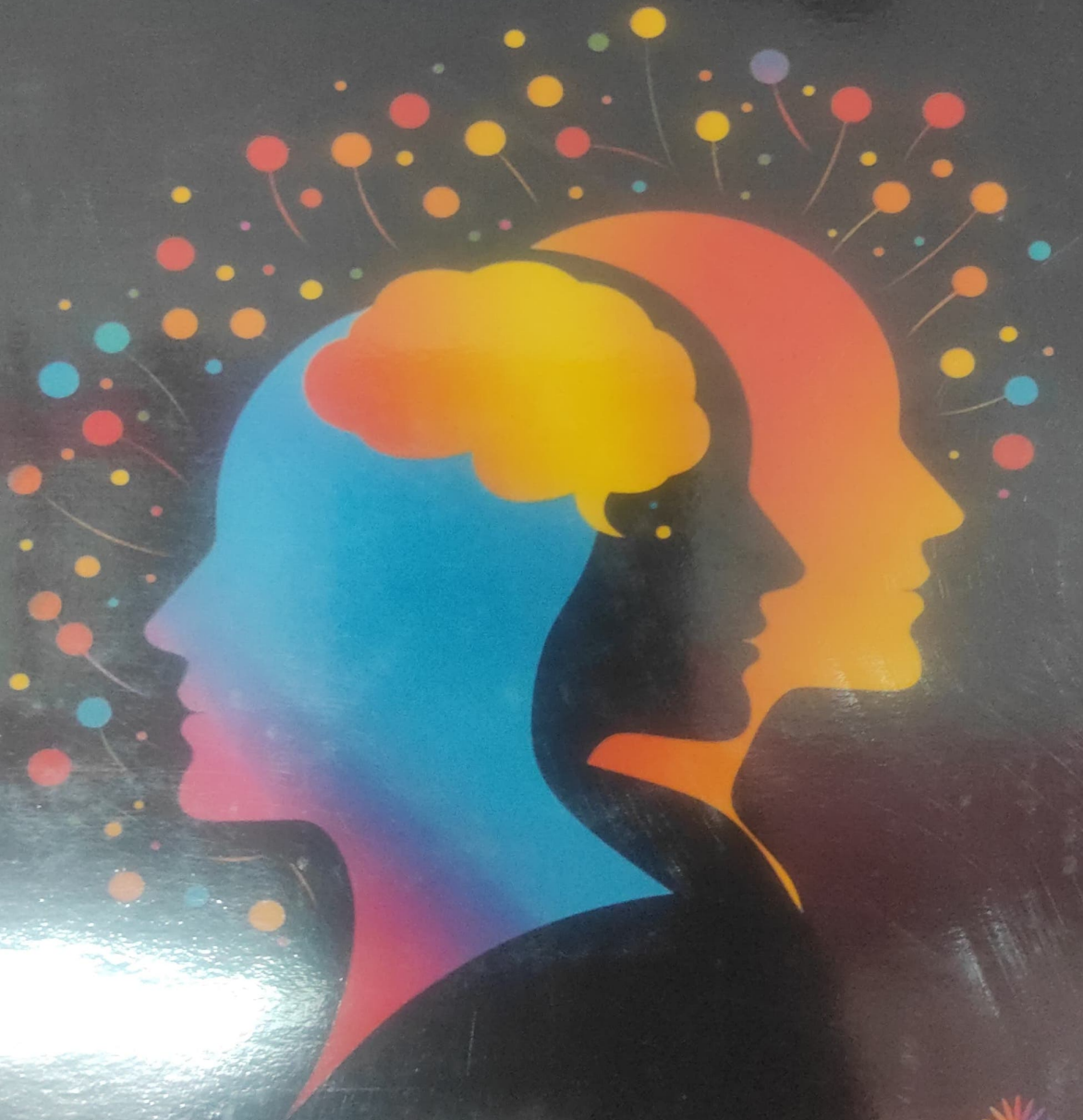


मनोविज्ञान और शिक्षा

एक समग्र दृष्टिकोण

Psychology and Education : A Holistic Approach



संपादक
डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर



मनोविज्ञान और शिक्षा

एक समग्र दृष्टिकोण

Psychology and Education :
A Holistic Approach

संपादक

डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर

(एम.ए., एम.फिल., बी.एड., पीएच.डी., GSET)

मनोविज्ञान विभाग में विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक
शासकीय कला महाविद्यालय, राणावाव, पोरबंदर (गुजरात)



JTS Publications

Delhi-110053



Published by:

Rajiv Kumar Sharma

JTS Publications

V-508, Gali No. 17, Vijay Park Delhi-110053

Mob.08527460252, 9990236819

Email: jtspublications@gmail.com

मनोविज्ञान और शिक्षा एक समग्र दृष्टिकोण

संपादक

डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर

© Publisher

First Edition, 2025

ISBN 978-93-49496-87-3

Price : 1500/-

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

Cover Design : Rajiv Sharma

Laser typeset by : Santoshi Computers, Delhi-53

PRINTED IN INDIA

Published and Printed by JTS Publications, Delhi-110053

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
	प्राक्कथन- प्रो. (डॉ.) योगेश ए. जोगसन	05
	सम्पादकीय- डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर	07
1.	मनोविज्ञान और शिक्षा : एक समग्र दृष्टिकोण डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर	13
2.	शिक्षा में नवाचार और सुधार प्रो कांता वर्मा	21
3.	मापन एवं मूल्यांकन आशीष कुमार त्रिपाठी	25
4.	छात्रों के विकास की प्रक्रिया: छात्रों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास मुनमुन जोठे, डॉ.शैलजा दुबे	29
5.	शैक्षिक मनोविज्ञान डॉ. सुनीता उपाध्याय	35
6.	विद्यालयी परिवेश में छात्रों के व्यवहार पर सामाजिक मनोविज्ञान का प्रभाव: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ अरुण नागोराव मुंडे	40
7.	हर बच्चे में एक अनूठी प्रतिभा को समझे आधुनिक भारत का शिक्षक: एक समकालीन शिक्षाशास्त्रीय अध्ययन श्रीमती रेखा	46
8.	बालक की अभिवृद्धि एवं विकास रूपल ठाकुर	51
9.	शैक्षिक मनोविज्ञान का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव: शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा की दिशा में एक समग्र अध्ययन शिवम् द्विवेदी, नेहा शुक्ला	54
10.	शिक्षा मनोविज्ञान में वर्तमान मुद्दे और चुनौतियाँ मनीषकुमार पी. मारु, डॉ. मयुर वी. भम्मर	56
11.	स्मृति और अधिगम महेताबबानुं जावीदहुसेन हुसैनी	62
12.	शिक्षा मनोविज्ञान: ज्ञान से व्यवहार तक प्रसादराव जामि	67
13.	शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग जितेन्द्र पायल	74

- | | | |
|-----|--|-----|
| 14. | शिक्षा का नया दृष्टिकोण मनोविज्ञान के संदर्भ में शिक्षा में भावात्मक बुद्धिमत्ता
डॉ. मनीषा एच.लखानी | 79 |
| 15. | शिक्षकों के लिए मानसिक स्वास्थ्य
डॉ. भुपेन्द्र कौर | 82 |
| 16. | शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी
श्रीमती सीमा सेखड़ी | 87 |
| 17. | शिक्षण अधिगम में चिंतनशील अभ्यास और क्रियात्मक अनुसंधान
डा. अरुण कुमार मिश्र | 88 |
| 18. | व्यक्तित्व विकास: एक परिचय
दिव्या कानजीभाई शियाणी, डॉ. मयुर वी. भम्मर | 93 |
| 19. | बुद्धि और शिक्षा
आशाबा राजेन्द्रसिंह परिहार | 99 |
| 20. | सीखना और सीखने को प्रभावित करने वाले कारक
पूर्णमा गुप्ता | 105 |
| 21. | शैक्षिक मनोविज्ञान: अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र
लीरीबेन खीमाभाई मोरी, डॉ. मयुर वी. भम्मर | 118 |
| 22. | बालक के विकासात्मक समंजन का मनोविज्ञान
डॉ अभिषेख कुमार पाण्डेय | 124 |
| 23. | विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की शिक्षा
नीलम रानी सक्सैना | 132 |
| 24. | शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग
प्रवीण कुमारी | 134 |
| 25. | शिक्षा और परामर्श में मानव और मशीन के संतुलन की संभावनाओं की खोज
परवेज़ खान | 138 |
| 26. | शिक्षा की प्रक्रिया में मनोविज्ञान का योगदान
डॉ गजानन र. रत्नपारखी | 143 |
| 27. | वर्तमान युग में शिक्षा मनोविज्ञान में योगदान का महत्व
प्रा. डॉ. आर. एन. वाकळे | 146 |
| 28. | व्यक्तिगत भिन्नता और शिक्षा
योगेश तिवारी | 152 |
| 29. | शिक्षा में नवाचार और सुधार की चुनौतियां और समाधान
सुमित कुमार | 154 |
| 30. | शिक्षा मनोविज्ञान एवं शैक्षणिक सिद्धांतों का व्यवहारिक अनुप्रयोग एवं सकारात्मक
परिणाम
आनंद कुमार जैन | 159 |

Table of Contents

1. Introduction	10
2. The Role of the State in Economic Development	20
3. The Role of the Market in Economic Development	30
4. The Role of the Firm in Economic Development	40
5. The Role of the Entrepreneur in Economic Development	50

शिक्षकों के लिए मानसिक स्वास्थ्य
MENTAL HEALTH OF TEACHER'S

डॉ. भूपेन्द्र कौर,
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग
स्कूल ऑफ एजुकेशन एण्ड ह्यूमैनिटिज,
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ एवं परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF MENTAL HEALTH)

'मानसिक स्वास्थ्य' का अर्थ व्यापक है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए कुप्पूस्वामी (Kuppuswamy, p-382) ने लिखा है—“मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक रोगों की अनुपस्थिति नहीं है। इसके विपरीत, यह व्यक्ति के दैनिक जीवन का सक्रिय और निश्चित गुण है। यह गुण उस व्यक्ति के व्यवहार में व्यक्त होता है, जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ-साथ कार्य करते हैं। उसके विचार, भावनाएँ और क्रियाएँ एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करते हैं। मानसिक स्वास्थ्य, कार्य ही ऐसी आदतों और व्यक्तियों तथा वस्तुओं के क्रति ऐसे दृष्टिकोणों को व्यक्त करता है, जिनसे व्यक्ति को अधिकतम संतोष और आनन्द प्राप्त होता है। पर व्यक्ति को यह संतोष उस समूह या समाज से, जिसका कि वह सदस्य होता है, तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त पडता है। इस प्रकार, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन की वह प्रक्रिया है, जिसमें समझौता और सामंजस्य, विकास और निरन्तरता का समावेश रहता है।”

'मानसिक स्वास्थ्य' के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए यहाँ कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं:

1. लैडल—“मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है—वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता।”

“Mental health means the ability to make adequate adjustments to the environment, on the plane of reality.”

2. कुप्पूस्वामी—“मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है—दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं और आदर्शों में सन्तुलन रखने की योग्यता। इसका अर्थ है—जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उनको स्वीकार करने की योग्यता।”

“Mental health means the ability to balance feelings, desires, ambitions and ideals on one's daily life. It means the ability to face and accept the realities of life.”

3. हैडफील्ड—“सामान्य रूप से मानसिक स्वास्थ्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व का सामंजस्य पूर्णता के साथ कार्य करना है।”

“In general we may say that mental health is an full harmonious functioning of the whole personality.”

शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले कारक
(FACTORS HINDERING TEACHER'S MENTAL HEALTH)

शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले और उसमें व्यक्तिगत असमायोजन (Personal Maladjustment) उत्पन्न करने वाले कारक इस प्रकार हैं—

1. आर्थिक कठिनाई (Economics Difficulties)—‘शिक्षा-आयोग’ (1964-66) की सिफारिश के अनुसार, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक का न्यूनतम वेतन 100 रुपये और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक का

न्यूनतम वेतन 220 रुपये मासिक है। आज की कमरतोड़ महँगाई के समय में इतना अल्प वेतन उनको सदैव आर्थिक कठिनाईयों में फँसाये रहता है। इस परिस्थिति का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पडना अनिवार्य है।

2. पद की असुरक्षा (Insecurity of Position)—राजकीय सहायता प्राप्त सब विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति जिला विद्यालय-निरीक्षक की स्वीकृति से होती है और उसी की स्वीकृति से उनको अपने पद से पृथक् किया जा सकता है। पर अनेक विद्यालय-प्रबन्धक धन की अनुचित बचत करने लिए अनेक शिक्षकों को किसी-न-किसी बहाने ग्रीष्मावकाश से पूर्व ही विद्यालय से अलविदाई दे देते हैं। इस प्रकार, अधिकारों शिक्षकों को अपने पदों को चोने का भय सदैव त्रासपूर्ण रखता है। इसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर अति अवांछनीय प्रभाव पडता है।

3. कार्य का अत्यधिक भार (Work Load)—आम लोगों का विचार है कि शिक्षक को प्रतिदिन कम घंटे काम करना पडता है और छुट्टियाँ भी अधिक मिलती हैं। काम के घंटे भले ही कम हों, पर उन सब घंटों में उसे अपने ध्यान को निरन्तर और इतना अधिक केन्द्रित रखना पडता है कि विद्यालय-समाप्ति के समय वह उसमें खालीपन का अनुभव करने लगता है जहाँ तक छुट्टियों की बात है, यदि उसे इतनी छुट्टियाँ न मिले, तो उसे विद्यालय-सम्बन्धी कार्यों को समाप्त करना असम्भव हो जाये। "The Commonwealth Teacher Training Study" के अनुसार इन कार्यों की संख्या 1,001 है जिनमें से कुछ सामान्य कार्य हैं—पाठ तैयार करना, उसे बालकों को पढाना, उनके लिखित कार्य को जाँचना, उनकी साप्ताहिक, मासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा लेना, उनके लिए विभिन्न क्रियाओं का आयोजन करना आदि-आदि। सारांश में, उस पर कार्य का इतना अधिक भार रहता है कि उसे व्यक्तिगत समायोजन करने की बात सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता है।

4. अपरिपक्व बुद्धि के बालकों से सम्पर्क (Contact with Immature Children)—शिक्षक का प्रतिदिन कई घण्टे अपरिपक्व बुद्धि के बालकों से संपर्क रहता है। वे अपने व्यवहार से ऐसी परिस्थितियाँ और समस्यायें उत्पन्न करते हैं कि शिक्षक को उन्हें सुलझाने में बहुत मानसिक परेशानी होती है इस प्रकार की परेशानी उसके मानसिक स्वास्थ्य के विकास में अवरोध उपस्थित कर देती है।

5. शिक्षण-सामग्री की कमी (Lack of Teaching Material)—एलिस (Ellis, pp. 525-526) ने लिखा है—"शिक्षण सामग्री जितनी ही कम होती है, उतना ही अधिक शिक्षक को बोलना पडता है और उतना ही अधिक समय उसे शिक्षण-सामग्री को तैयार या एकत्र करने में व्यतीत करना पडता है।" अधिक बोलने और अधिक व्यस्त रहने से शिक्षक की मानसिक थकान थोड़ी या अधिक मात्रा में सदैव बनी रहती है। फलस्वरूप, उसका मानसिक स्वास्थ्य गिरता चला जाता है।

6. मनोरंजन का अभाव (Lack of Recreation)—शिक्षक प्रतिदिन कई घण्टे कठोर मानसिक परिश्रम करता है। इतने परिश्रम के पश्चात् वह अपने मस्तिष्क को पुनः ताजा करने के लिए मनोरंजन की आवश्यकता पर विचार करता है। पर दरिद्र-नारायण उसे अपने विचार को कार्य में परिणत करने का निषेध करते हैं। परिणामतः उसके मस्तिष्क का तनाव यथावत् बना रहता है, जो उसके मानसिक स्वास्थ्य को जर्जर करने में अति सतर्कता से कार्य करता है।

7. बाहरी कार्यों पर प्रतिबन्ध (Restriction of External Work)—शिक्षक के सभी प्रकार के बाहरी कार्यों पर, जिनका विद्यालय और शिक्षण से सम्बन्ध नहीं होता है, पूर्ण प्रतिबन्ध रहता है। उसे लेख या पुस्तक लिखने, निर्धारित संख्या से अधिक बालकों की ट्यूशन करने, यहाँ तक कि अपनी शैक्षिक योग्यता में वृद्धि करने के लिए किसी सार्वजनिक परीक्षा में "The Ninth Yearbook of the Department of Classroom Teachers" (p.88) सम्मिलित होने की भी अनुमति नहीं होती है। इस प्रतिबन्ध के दुष्परिणाम के विषय में

लिखा गया है—“इस प्रतिबन्ध का निश्चित परिणाम होता है—भय, कपट और कटूता जो मानसिक स्वास्थ्य की विरोधी अभिवृत्तियाँ हैं।”

8. **जातीय विद्यालय (Caste Schools)**—हमारे देश के अधिकांश विद्यालयों का संचालन—सूत्र किसी-न-किसी जाति के हाथ में है। इस प्रकार के जातीय विद्यालय में उसी जाति के शिक्षक को नियुक्त करने की प्रथा है। यह संयोग से किसी अन्य जाति का शिक्षक नियुक्त हो जाता है, तो उसे घृणित और त्याज्य समझकर निश्चित दूरी पर रखा जाता है। इस प्रकार का दुर्व्यवहार उस शिक्षक की समायोजन की क्षमता का विनाश कर देता है।

9. **विद्यालय के निरंकुश शासक (Anarchy Administration)**—विद्यालय के प्रिंसिपल, प्रबन्धक और निरीक्षण—सभी निरंकुश शासक होते हैं और सभी में निरंकुशता की सीमा पर पहुँचने के लिए होड़ लगी रहती है। शिक्षक को उनकी निरंकुशता का आघात सहन करना पड़ता है। वह उनसे इतना भयभीत रहता है कि अपनी मुसीबतों के बारे में एक शब्द बोलने के लिए भी अपना मुँह खोलने का साहस नहीं करता है। ऐसे शिक्षक की इच्छाओं का दमन और आत्मा का हनन हो जाता है। अतः उससे किसी प्रकार के समायोजन की आशा करना व्यर्थ हो जाता है।

10. **समाज में निम्न स्थिति (Low Status in Society)**—समाज के इस परिश्रमी और परहितकारी सदस्य का समाज में कोई स्थान नहीं है। उसे इतनी निम्न स्थिति प्रदान की जाती है कि उसका सम्मान और स्वागत करने वाले को शंका की दृष्टि से देखा जाता है। सत्य यह है कि समाज के भावी सदस्यों का निर्माता और पथ-प्रदर्शक होने पर भी शिक्षक के प्रति घोर पातकी का सा व्यवहार किया जाता है। इससे उसकी सभी आशाओं और सभी अभिलाषाओं पर इतना भारी हिमपात हो जाता है कि वह अपने मानसिक स्वास्थ्य के विकास को असम्भव समझकर स्थायी रूप से विस्मृत कर देता है।

11. **अस्वस्थ निवास स्थान (Unhealthy Residence)**—दरिद्रता का चिर-सखा होने के कारण शिक्षक दरिद्रों की किसी घनी और अस्वस्थ बस्ती में किराये का छोटा-सा मकान लेकर, जिसमें धूप, वायु और प्रकाश का स्थायी अभाव रहता है, अपने जीवन के दिन काटता है। इस प्रकार का अस्वस्थ निवास-स्थान उसको मानसिक रूप में सदैव के लिए अस्वस्थ बना देता है।

12. **शिक्षकों का पारस्परिक संघर्ष (Conflict Among Teachers)**—हमारे देश का शिक्षक-वर्ग अपने संघर्ष और एकता के अभाव के लिए काफी बदनाम है। ऐसे विद्यालय के दर्शन होने दुर्लभ हैं जिसमें शिक्षकों या शिक्षकों और प्रधानाचार्य का संघर्ष अविराम गति से न चलता हो। इस प्रकार का संघर्ष शिक्षक के मस्तिष्क को संघर्षपूर्ण बनाकर उसे अपने समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य का विनाश करने के लिए बाध्य करता है।

शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति करने वाले कारक (FACTORS FOSTERING TEACHER'S MENTAL HEALTH)

शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति करने और उसे व्यक्तिगत समायोजन में सहायता देने में निम्नांकित कारकों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है—

1. **कार्य भार में कमी (Lesser Work)**—प्रत्येक व्यक्ति की कार्य करने की सीमा होती है। यदि उसे उससे अधिक कार्य दे दिया जाता है, तो उसे अपनी अतिरिक्त शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है। परिणामतः कुछ समय के उपरान्त उनका शारीरिक स्वास्थ्य गिरने लगता है, जिसका कुप्रभाव उसके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है अतः शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए उसे उतना ही कार्य सौंपा जाना चाहिए, जितना वह कर सकता है।

2. पद की सुरक्षा (Security of Job)—अपने असुरक्षित पद के सम्बन्ध में शिक्षक इतना अधिक चिन्तित रहता है कि उसे एक क्षण के लिए भी मानसिक शान्ति नहीं मिलती है अतः उसके पद को इतना सुरक्षित कर देना चाहिए कि विद्यालय-प्रबन्धक लाख प्रयत्न करने पर भी उसे अपने पद से पृथक् न कर सके। पद की ऐसी सुरक्षा उसके मानसिक स्वास्थ्य की वृद्धि का शक्तिशाली कारण है।

3. वेतन-वृद्धि व नियमित वेतन (Increment and Regular Salary)—शिक्षकों को इतना कम वेतन मिलता है कि वह सदैव चिन्ताग्रस्त रहकर अपने मानसिक स्वास्थ्य को खो देता है। अतः उसके वेतन में इतनी वृद्धि कर दी जानी चाहिए कि वह आर्थिक चिन्ता से मुक्त होकर मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति कर सके। पर केवल वेतन-वृद्धि ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि ऐसे अनेक विद्यालय हैं, जिसमें शिक्षकों को नियमित रूप से वेतन नहीं मिलता है और उनको कई-कई माह तक दूसरों का आर्थिक आश्रय लेना पड़ता है। इससे न केवल उनके मानसिक स्वास्थ्य पर दूषित प्रभाव पड़ता है, वरन् वे असमायोजन की ओर भी द्रुत गति से अग्रसर होते हैं। उनको इन अभिशापों के पास से स्वतन्त्र रखने के लिए प्रतिमाह निश्चित तिथि पर वेतन दिए जाने की दृढ व्यवस्था की परम आवश्यकता है।

4. शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान (Attention on Physical Health)—शारीरिक स्वास्थ्य के आधार पर ही मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति की जा सकती है। अतः शिक्षक के शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि उसके लिए मनोरंजन, स्वस्थ निवास स्थान, निःशुल्क चिकित्सा, कार्य की उत्तम दशाओं आदि की समुचित व्यवस्था की जाये।

5. शिक्षण की दशाओं में सुधार (Improvement in Teaching Conditions)— शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति करने के लिए शिक्षण की पुरातन और परम्परागत दशाओं में सुधार करके उनको नवीनतम रूप प्रदान करना अनिवार्य है। गेट्स तथा अन्य (Gates & Other, p.794) ने ठीक ही लिखा है—“शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति करने के लिए शिक्षक की दशाओं में उन्नति करना आवश्यक है।”

6. मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान की शिक्षा (Mental Health Education)— प्रशिक्षण के समय अध्यापक को मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान की उत्तम शिक्षा दी जानी चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करके वह अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने और उनकी उन्नति करने में सफल हो सकता है।

7. विद्यालय का जनतन्त्रीय वातावरण (Democratic School Environment)— पक्षपात, जातीयता, चाटुकारी और निरंकुशता द्वारा निर्मित विद्यालय के वातावरण को समानता और जनतन्त्रीय सिद्धान्तों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। इस प्रकार का वातावरण शिक्षक का मानसिक सन्तुलन बनाये रखकर मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायता दे सकता है।

8. विद्यालय-प्रशासन में साझेदारी (Participation in School Administration)— विद्यालय के प्रिंसिपल, प्रबन्धक और निरिक्षक, शिक्षक के प्रति इतना अमानुशिक व्यवहार कीते हैं कि उसका समायोजन और मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इसका उपचार कराते हुए एलिस (Allis, p.417) ने लिखा है—“विद्यालयों के संचालन और नीतियों एवं विधियों को निर्धारित करने में शिक्षकों का अधिक भाग होना चाहिए।”

9. सामाजिक सम्मान की प्राप्ति (Social Status Attainment)—सामाजिक स्वीकृति और सम्मान न मिलने के कारण शिक्षकों में उत्पन्न होने वाला अन्तर्द्वन्द्व उसके मानसिक स्वास्थ्य को चूर-चूर कर देता है। सामाजिक स्वीकृति और सम्मान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि यह है कि शिक्षक अति उत्साह से सामाजिक

मनोविज्ञान और शिक्षा: एक समग्र दृष्टिकोण

कार्यों में भाग ले। यही कारण है कि टर्मन (Terman) ने अपनी पुस्तक "The Teacher's Health" में इस बात पर बल दिया है कि शिक्षकों को सामाजिक कार्यों में अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

10. शिक्षक-संघों का संगठन (Organization of Teacher's Association)—शिक्षकों की हीन दशा में सुधार करके, उनके मानसिक स्वास्थ्य के स्तर को ऊँचा उठाने का एक उत्तम उपाय है—स्थानीय, प्रान्त और राष्ट्रीय स्तरों पर शक्तिशाली शिक्षक-संघों का संगठन। ये संघ, शिक्षकों के हितों की रक्षा और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करके उनके मानसिक स्वास्थ्य के विकास में अपूर्व योग दे सकते हैं।

11. शिक्षण-संस्थाओं का योग (Contribution of Teaching Institution)—प्रशिक्षण-संस्थायें शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति में योग दे सकती हैं। इस सम्बन्ध में गेट्स तथा अन्य (Gates & Other, p.787) ने लिखा है—“प्रशिक्षण-संस्थाओं द्वारा उत्तम नागरिक और मानसिक स्वास्थ्य के छात्रों का चुनाव, शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति कर सकता है।”

12. शिक्षक का योग (Contribution of Teachers)—स्वयं शिक्षक अपने मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति में योग दे सकती हैं। इस सम्बन्ध में गेट्स तथा अन्य (Gates & Other, p.797) ने लिखा है—“यदि शिक्षक अपने-आपको अधिक अच्छी तरह समझ ले और यदि वह अपने-आपको वैसा ही मान ले, जैसा कि वह है और यदि वह अपने जीवन को निर्देशित करने में सक्रिय भाग ले, तो वह अपने स्वयं के मानसिक स्वास्थ्य में उन्नति कर सकता है।”

सन्दर्भ ग्रन्थ—

1. ठाकुर, यतीन्द्र, (2017-18), समावेशी शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. पचौरी गिरीश (2008), शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
3. मंगल एस. के., पाठक. पी. डी. (2012), अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
4. शर्मा, आर. ए. (2017), विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
5. सिंह, ए.के. (2011), आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
6. डब्ल्यू.एच.ओ. (2012), रिक्स टू मेंटल हेल्थ एन ओवर व्यू ऑफ बलनरेबिलिरीज एण्ड रिक्स फ़ैक्टर्स।
7. www.indiaspend.com (आर्टिकल ऑन सूइसाइड ऑफ उ स्टूडेन्ट इन इंडिया)।

परिचय

डॉ. मयुर वी. भम्मर (GES Class-II) "कृष्णार्पण"

(एम.ए., एम.फिल., बी.एड., पीएच.डी., GSET)

संपर्क: 8200602526



डॉ. मयुर वी. भम्मर वर्तमान में शासकीय कला महाविद्यालय, राणावाव, पोरबंदर (गुजरात) के मनोविज्ञान विभाग में विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। इससे पूर्व उन्होंने डी.बी.

हाईस्कूल, पलसाणा, सूरत में मनोविज्ञान विषय के शिक्षक के रूप में ९ वर्षों तक कार्य किया है।

मनोविज्ञान विषय एवं शोध कार्य में उनकी गहरी रुचि है। उन्हें पढ़ने का अत्यधिक शौक है, और लेखन कार्य उनकी विशिष्टता है। शांत स्वभाव और उत्कृष्ट लेखन कौशल के कारण उनकी कई रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी कई रचनाएँ प्रतिलिपि और मातृभारती जैसे मंचों पर भी उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाले ४०० से अधिक व्यक्तियों का परिचयात्मक लेखन किया है जो अत्यंत प्रसिद्ध हुआ है। डॉ. भम्मर ने कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय परिसंवादों तथा शोध-पत्रिकाओं (जर्नल्स) में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। साथ ही, उन्होंने ३० से अधिक पुस्तकों में अध्यायों के रूप में शोध आलेख भी लिखे हैं।

■ सम्मान एवं पुरस्कार:

लेखन कार्य की सराहना स्वरूप मातृभारती द्वारा उन्हें "मातृभारती रीडर्स चॉइस अवॉर्ड-२०१९" से सम्मानित किया गया है। उनके उत्कृष्ट शोध कार्य हेतु उन्हें मनोविज्ञान भवन, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट एवं मनोविज्ञान अध्ययन समिति, भक्त कवि नरसिंह मेहता विश्वविद्यालय, जूनागढ़ द्वारा "भक्त कवि नरसिंह मेहता पुरस्कार" से भी सम्मानित किया गया है।

■ लेखक की लेखन-यात्रा की झलक:

- सामाजिक व्यवहार का मनोविज्ञान
- व्यक्तिगत समायोजन का मनोविज्ञान
- किशोरों का मनोविज्ञान
- सामान्य मनोविज्ञान
- बाल व्यवहार का मनोविज्ञान
- जैविक मनोविज्ञान
- बचपन और बाल मनोविज्ञान
- मूलभूत मनोवैज्ञानिक अवधारणाएँ
- मूलभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ
- जीवन अवधि मनोविज्ञान
- परामर्श मनोविज्ञान
- विवाह का मनोविज्ञान



जे.टी.एस. पब्लिकेशन

88 गली नं.17, विजय पार्क, दिल्ली - 110053

फोन : 8527460252, 9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद,

उत्तर प्रदेश, पिन - 201102

मूल्य : १५००.०० रुपये

ISBN 978-93-49496-87-3



9 789349 496873